

राकेश कुमार चन्देल
चित्रकूट, उत्तर प्रदेश

हिन्दी :भारत की आत्मा

जब-जब भारत ने ललकारा,
हिन्दी आगे आयी है।
वीरों के रणघोषों में भी,
इसकी गूँज समायी है।।

सीमा पर जो डटा हुआ है,
उसकी भी पहचान यही।
माँ की पहली बोली बनकर,
देती जीवन-दान यही।।

ज्ञान सभी भाषाओं से लो,
यह उत्तम व्यवहार रहे।
पर अपनी हिन्दी का जग में,
सबसे ऊँचा सत्कार रहे।।

विद्यालय की हर कक्षा में,
हिन्दी का सम्मान रहे।
विज्ञान, तकनीक और शोधों में,
भी इसका स्थान रहे।।



कलम उठे तो हिन्दी बोले,
मंच सजे तो हिन्दी हो।
भारत की हर नई सफलता में,
हिन्दी की ही बिन्दी हो।।

युवा शक्ति! अब समय आ गया,
हिन्दी का परचम लहराओ।
विश्व पटल पर भारत की,
संस्कृति का संदेश सुनाओ।।

शब्द-शब्द में शक्ति भरो,
कर्मों से पहचान करो।
भारत की इस राजभाषा का,
मिलकर सब सम्मान करो।।

आओ आज प्रतिज्ञा कर लें,
निज भाषा का मान करेंगे।
भारत माँ के भाल की बिन्दी,
इसका हम सम्मान करेंगे।।

जब तक सूरज-चाँद रहेगा,
हिन्दी का सम्मान रहेगा।